वैष्णव धर्म में अवतारवाद की अवधारणा

वैष्णव धर्म का इतिहास ऋग्वेद से प्रारंभ माना जाता है। जहां विष्णु एक सौर देवता के रूप में वर्णित है। विष्णु पूजा पर आधारित धर्म वैष्णव कहलाया। इन्हें भागवत, नारायण, हरि बैकुंठनाथ आदि नामों से वर्णित किया गया है। इन नामों में सबसे अधिक प्रचलित नाम भागवत था। पाणिनी की अष्टाध्यायी में भागवतों का वर्णन है। गुप्त अभिलेखों में विष्णु की अपेक्षा भागवत शब्द अधिक प्रिय है। ओल्डेन बर्ग ने विष्णु का अर्थ विश्व को पार करने वाला माना है। विष्णु का प्रथम उल्लेख ऋग्वेद में प्राप्त होता है।

ऋग्वेद में विष्णु को ऋतस्य गर्भमू (रिति को जन्मने वाले) कहा गया है। ऋग्वेद में विष्णु एक छोटे स्तर के देव हैं। प्रथम बार ब्राह्मण ग्रंथों में श्रेष्ठ देव के रूप में उनकी महिमा का वर्णन प्राप्त होता है। ब्राम्हण ग्रंथों में इन्हें यज्ञ से संबंधित माना गया है। इस काल में वे प्रजापति एवं शिव के साथ तीन महान देव के रूप में स्थापित हुए । ऋग्वेद में विष्णु इंद्र से गौड़ देवता हैं तथा कृत के वध में उन्होंने इंद्र की सहायता की थी। महाभारत तथा पुराणों में यह विचारधारा उलट गई तथा इंद्र को विष्णु से गौड़ मान लिया गया , वह स्वयं योद्धा हो गए । वराह के रूप में हिरण्याक्ष का वध , नरसिंह के रूप में हिरणकश्यप का वध , राम के रूप में तारक का वध तथा स्वयं विष्णु के रूप में नामूची, कालनेमि , राधेय , हार्दिक्य , शुंभ तथा निशुम्भ आदि का वध किया।

शतपथ ब्राह्मण में विष्णु एवं सूर्य का तारतम्य स्थापित करने का प्रयास किया गया है। उत्तर वैदिक काल में गरुड़ विष्णु का वाहन हो गया। सूर्य एवं नागवंश में शत्रुता होने के कारण गरुड़ को सांपों का भोजन करने वाला माना गया है। उपनिषद में विष्णु के आधुनिक स्वरूप का वर्णन प्राप्त होता है। वैष्णव धर्म में प्रारंभ में नारायण प्रमुख देवता थे , इनका स्थान संभवत विष्णु से उच्च था। नारायण का प्रथम उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में हुआ है। आर० जी० भंडारकर तथा सुवीरा जायसवाल ने नारायण शब्द की उत्पत्ति महाभारत के उद्योग एवं नारायणी पर्वों के आधार पर की है। वह नारायण इसलिए हैं क्योंकि उन पर समस्त विश्व आश्रित है।

नारायण को प्रजापति से संबन्धित किया जाता है , मनुस्मृति वायु पुराण तथा विष्णु पुराण में ऐसे साक्ष्य प्राप्त होते हैं। विष्णु पुराण के अनुसार ब्रह्मा को नारायण भी कहा जाता है । नारायण का साम्य कपिल मुनि से भी स्थापित किया जाता है , तथा कपिल को विष्णु का पंचम अवतार माना जाता है । वासुदेव कृष्ण का प्रथम विवरण छांदोग्य उपनिषद में प्राप्त होता है , यहाँ ये देवकी एवं वासुदेव के पुत्र हैं तथा सत्वत या विष्णि कबीले से संबंधित है। इनके गुरु घोर अंगिरस है ।

वैष्णव धर्म में अवतारवाद का प्रारंभ नारायण का वासुदेव कृष्ण के एकात्म से माना जा सकता है। वैष्णव धर्म में प्रमुख देवताओं जैसे नर्सिंग वाराह बुद्ध आदि को सम्मिलित किया गया जिससे वैष्णव धर्म में अवतारवाद का विकास हुआ। वैष्णव धर्म में अवतारवाद को स्पष्ट रूप से गीता में विकसित किया गया तथा पुराणों में उन्हें महात्म्य प्राप्त हुआ। पुराणों में विष्णु के 10 स्पष्ट अवतारों की व्याख्या हुई है मत्स्य, कूर्म, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध तथा कल्कि। वराह एवं मत्स्य पुराण में इनका क्रमानुसार वर्णन है।

पाँचरात्र साहित्य में विष्णु के मानवीय पशु तथा वनस्पति के स्वरूप में अवतार का वर्णन प्राप्त होता है। विष्णु पूजा में विभव स्वरूप अवतार की अवधारणा है। सतवत एवं अहिरबुधन्य संहिता में विष्णु के 39 अवतारों का वर्णन है। अवतारवाद में विष्णु के अर्थ एवं विभव दोनों स्वरूपों की पूजा होती है। इन के 10 प्रमुख अवतार निम्न है –

1- मत्स्य	2- कूर्म	3- वाराह
4- नरसिंह	5-वामन	6- परशुराम
7- राम	8- कृष्ण	9- बुद्ध
10- कल्कि		

मत्स्य अवतार - मत्स्य अवतार का प्रथम विवरण शतपथ ब्राह्मण में है जहां मनु को प्रलय के समय मछली के द्वारा रक्षित किया गया था। महाभारत में मछली को प्रजापति (ब्रह्मा) कहा गया है। इससे विदित होता है कि मछली को प्रथम प्रजापति का तत्पश्चात विष्णु का अवतार माना गया। विष्णु द्वारा मत्स्य अवतार ग्रहण करने की कथा भागवत पुराण में मिलती है , जहाँ यह उल्लेख है कि पिछले कल्प के अन्त में ब्रह्मा के सो जाने के कारण ब्रह्मा नामक नैमित्तिक प्रलय हुआ। विष्णु ने मत्स्य का अवतार लेकर चारों वेदों तथा सप्त ऋषियों की सेवा की तथा सृष्टि की पुनर्रचना में अपना योगदान किया।

कूर्म अवतार – कूर्म अवतार भी शतपथ ब्राह्मण में वर्णित है तथा प्रजापति से संबंधित है। वैष्णव धर्म में यह प्रजापति से ही लिया गया है। प्रलय के समय खो गई बहुमूल्य वस्तु की प्राप्ति हेतु समुद्र मंथन हुआ। विष्णु कछुए का रूप रखकर महासागर में विराजमान हुए। हिमालय की शाखा मन्दरांचल ने मथानी का कार्य लिया तथा नाग वासुकी ने रस्सी का कार्य किया। समुद्र मंथन से लक्ष्मी महान विष अमृत कौसुत्भ सहित 14 बहुमूल्य रत्न की प्राप्ति हुई। राम ने भी कच्छप को नारायण कहा है।

वाराह अवतार – वाराह अवतार पूर्व आर्य संस्कृति के सूकर पूजन का आर्य धर्म में मिश्रण है। ऋग्वेद ने वराह का वर्णन किया है जो आर्यों का शत्रु था तथा इन्द्र के द्वारा वध किया गया था। तैत्तिरीय संहिता में वराह अनार्यों की संपत्ति की पहाड़ियों पर रक्षा करता था। विष्णु ने उसे पहचान लिया इसी कारणवश वह विष्णु का शत्रु हो गया। शतपथ ब्राह्मण में एमूशा नामक सूअर का वर्णन है जिसने दैवीय जन्म से पृथ्वी को उठा लिया था। एमूशा को प्रजापति (ब्रह्मा) से संबंधित किया गया है। महाभारत काल में वराह विष्णु का अवतार था तथा उसने हिरण्याक्ष का वध किया था। वाराह को कृषि संबंधी देव भी माना गया है।

मध्यप्रदेश में उदयगिरि गुफा में वाराह की मूर्ति का निर्माण गुप्त काल में किया गया था। उत्तर प्रदेश में भीतरगांव से भी वाराह का चित्र प्राप्त होता है। रघुवंश तथा रावणवाहों में भी महावाराह तथा आदि वाराह का वर्णन है। वाराह के रूप में विष्णु ने हिरण्याक्ष का वध कर पृथ्वी की रक्षा की थी।

नरसिंह अवतार - तैत्तिरीय आरण्यक के अतिरिक्त किसी भी वैदिक साहित्य में नरसिंह का वर्णन नहीं प्राप्त होता है। कभी-कभी इंद्र तथा दानव नामुचि का संस्करण नरसिंह से संबंधित किया जाता है। हरिवंश के अनुसार जब विष्णु भक्त प्रहलाद को उसके पिता हिरणकश्यप ने सताना प्रारंभ किया तो देवताओं की प्रार्थना पर विष्णु ने नरसिंह का अवतार लिया । हिरणकश्यप का मानव तथा पशु वध नहीं कर सकते थे । विष्णु ने नरसिंह के अवतार से हिरणकश्यप का वध किया।

वामन अवतार - वामन अवतार की कथा विष्णु के ऋग्वेद के 3 पदों में ईश्वर की अभिव्यक्ति में वर्णित है। दानव राजा बलि ने अपने तप से समस्त विश्व को जीत लिया था। जब वह यज्ञ चल रहा था तो विष्णु ने वामन का स्वरूप रखकर उससे 3 पदों की मांग की। मांग स्वीकार किए जाने पर विष्णु ने अपना आकार वृहद कर 3 पदों में समस्त सृष्टि को माफ लिया तथा बलि को पाताल भेज दिया। महाभारत में वामन विष्णु की गणना अदिति के पुत्रों आदित्यों में हुई है। स्कंद गुप्त का जूनागढ़ अभिलेख (455 ईसवी) वामन की प्रस्तुति से ही प्रारंभ होता है। गया में वामन के पदों के हाथ की छाप का अंकन स्वीकारा जाता है।

परशुराम अवतार - परशुराम का अवतरण ब्राम्हण - क्षत्रिय संघर्ष की पौराणिकता पर आधारित है। यह कथा वृगु ब्राह्मणों के द्वारा प्रतिपादित की गई तथा केवल उन्हीं में प्रचलित थी। परशुराम ने कृत्य वीर्य अर्जुन के पद हेतु अवतार लिया था। कृत वीर्य ने परशुराम के पिता यमदमनी को प्रताड़ित किया था। जिससे कुपित होकर परशुराम ने समस्त क्षत्रियों के विनाश हेतु बीड़ा उठाया था। 21 बार संहार का प्रयास किया। अंततः परशुराम स्वयं राम के द्वारा पराजित किए गए। इन्हें विष्णु का अवशेषावतार माना जाता है।

राम अवतार - राम अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र थे। विष्णु का यह अवतार प्रख्यात ज्ञानी दानव रावण का वध करने के लिए हुआ था। ऋग्वेद में इछ्वाकु , राम , दशरथ आदि का वर्णन है परंतु देवता के रूप में राम की स्थापना नहीं प्राप्त होती है। विष्णु का राम के रूप में अवतार का वर्णन नारायणी खंड कालिदास के रघुवंश , दशरथ जातक तथा पुराणों में प्राप्त होता है। सीता को भी इसी काल में राम से जोड़ा गया। उन्हें कृषि की देवी तथा सिर ध्वज जनक की पुत्री माना गया। सीता आयोनिज (जो गर्भ से नहीं जन्मी) थी तथा पति के द्वारा अपमानित होने पर पुनः पृथ्वी के गर्भ में वापस लौट गई थी।

हिंदुओं की आदर्श नारी सीता उनकी पत्नी थी। राम के सम्पूर्ण जीवन की कथा ही वाल्मीकि के महाकाव्य रामायण का विषय है । सम्पूर्ण भारत भारत मे यह राम - कथा युगों-युगों से लोकप्रिय है। यही राम विष्णु के सातवें अवतार माने गए है। अग्नि पुराण में यह उल्लेख है कि राम की प्रतिमा धनुष , बाण , खड़ग और शंख से युक्त चतुर्भुजी अथवा द्विभुजी निर्मित होनी चाहिये।

कृष्ण अवतार - सतवत कृष्ण स्वयं विष्णु हैं। कुछ विद्वानों में इनको दशावतार में स्थान देने पर मतभेद है क्योंकि विष्णु या कृष्ण दोनों एक ही हैं। इन्हें पूर्णावतार कहा जाता है जबकि अन्य को अंशावतार माना जाता है। वासुदेव – देवकी के पुत्र कृष्ण आठवें अवतार माने गए है। उनका जीवन चरित्र अनेक पुराणों – हरिवंश , भागवत , विष्णु आदि तथा अन्य विभिन्न ग्रन्थों में प्राप्त होता है। उनका व्यक्तित्व इतना उदात्त , लोकरंजक एवं व्यापक रहा है तथा भारतीय साहित्य में उसका बहुमुखी वर्णन मिलता है और ललित कथाएँ भी उनसे ओत – प्रोत है।

शिल्पियों के लिए तो कृष्ण – लीला अत्यंत प्राचीन काल से एक मधुर विषय रही है और उन्होने कृष्ण की जीवन झाँकी को विविध रूपों में अंकित कर अपनी कला को धन्य माना है। ऐसे अनेक चित्रण भारत के विभिन्न भागों में , कश्मीर से महाबलीपुरम और बंगाल से सौराष्ट्र तक पाये गए है। किन्तु इन सभी चित्रणों में , विविधता और शिल्पीकरण की दृष्टि से , खजूराहों चित्रण बेजोड़ है।

बुद्ध अवतार - गुप्त काल में बुद्ध को वैष्णव धर्म में सम्मिलित कर लिया गया। वैष्णव धर्म ने बुद्ध को विष्णु का अवतार मानकर उसे ब्राह्मण धर्म का अंग बना लिया। प्रारंभ में वैष्णव विद्वानों ने इसे स्वीकार नहीं किया। कुमारिल भट्ट ने बुद्ध को नारायण का अवतार नहीं माना है। हरीति स्मृति में बुद्ध की पूजा को प्रतिबंधित एवं निंदित किया गया है। अहिर्बुधन्य संहिता में बुद्ध को विष्णु का अवतार माना गया है तथा उन्हें संततमान कहा गया है। जयदेव के गीत गोविंद के अनुसार विष्णु ने समाज सुधार हेतु एवं बलि प्रथा को रोकने हेतु बुद्ध का अवतार लिया था।

कल्कि अवतार – कल्कि विष्णु का भविष्य अवतार है। कल्कि अवतार का विवरण महाभारत के अरण्यकांड में प्राप्त होता है। कल्कि का यह अवतार कलियुग के अंत मे होगा। जब सब राजा लुटेरे हो जाएंगे , ब्राह्मण , क्षत्रिय तथा वैश्य पाखंडी और शूद्र राजा होंगे ,कभी स्वाहा , स्वधा तथा वषट्कार की ध्वनि सुनाई नहीं देगी। उस समय कलियुग पर शासन करने के लिए विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर मे विष्णु का जन्म होगा। कल्कि म्लेक्षों के दमन हेतु कलयुग के अंत में अवतरित होंगे। श्वेत अश्व पर सवार होकर वह दैवीय खड़ग से सृष्टि को सुधारेंगे। विष्णु का यह अवतार बुद्ध के मैत्रेय अवतार से प्रभावित दिखता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि विष्णु के 10 अवतार है। पहले तीन अवतार , अर्थात मत्स्य , कूर्म और वाराह प्रथम महायुग में अवतरित हुए है। पहला महायुग सत्य युग या कृत युग है। नरसिंह , वामन , परशुराम और राम दूसरे अर्थात त्रेता युग में अवतरित हुए । कृष्ण और बलराम द्वापर युग में अवतरित हुये। इस समय चल रहा युग कलयुग है और भागवत पुराण की भविष्यवाणी के आधार पट इस युग के अन्त में कल्कि अवतार होगा। इससे अन्याय और अनाचार का अन्त होगा तथा न्याय का शासन होगा। जिससे सत्य युग की फिर से स्थापना होगी।

- कुछ धार्मिक समूहों की मान्यता के अनुसार कृष्ण ही परमात्मा है और दशावतार कृष्ण के ही 10 अवतार है। अतः उनकी सूची मे कृष्ण नहीं बल्कि उनके स्थान पर बलराम होते है। कुछ लोग बलराम को एक अवतार मानते है बुद्ध को नहीं। सामान्यतः बलराम को आदिशेष (विष्णु के विश्राम के आधार) का अवतार माना जाता है। दशावतार के बारें में अन्य विचारों में , कुछ लोग अवतारों के क्रम को युक्ति संगत बनाने की कोशिश में , उन्हे विकासवादी डार्विन के सिद्धान्त से जोड़ते है। इस प्रकार दशावतार क्रमिक विकास का प्रतीक या रूपक की तरह है।